केवल श्रीकृष्ण के वाक्य को सिद्ध करने के लिये उसे देखना चाहता था, जिससे भविष्य में होने वाले मनुष्य यह समझ सकें कि श्रीकृष्ण ने अपने को परम सत्य घोषित ही नहीं किया; वल्कि अर्जुन को वास्तव में अपने इस रूप का दर्शन भी कराया। अर्जुन के लिये इस तथ्य को प्रमाणित करना आवश्यक है, क्योंकि उससे परम्परा का प्रारम्भ हो रहा है। भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्वबोध के लिये जो अर्जुन के चरणचिह्नों का अनुसरण करते हैं, उन मनुष्यों को यह भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि श्रीकृष्ण ने केवल परम सत्य होने का दावा ही नहीं किया, अपने इस रूप को वास्तव में प्रकट भी किया।

श्रीभगवान् ने अर्जुन को विश्वरूप दर्शन के लिये पर्याप्त शक्ति दी है, यद्यपि जैसा पूर्व वर्णन है, वे जानते हैं कि अर्जुन उसे अपने लिए नहीं देखना चाहता।

सञ्जय उवाच।
एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्।।९।।

सञ्जयः उवाच=सञ्जय ने कहा; **एवम्**=इस प्रकार; **उक्त्वा**=कह कर; **ततः**=उसके उपरान्त; **राजन्**=हे राजन्; **महायोगेश्वरः**=परम शक्तिशाली योगेश्वर; **हरिः**=भगवान् श्रीकृष्ण ने; **दर्शयामास**=दिखाया; **पार्थाय**=अर्जुन को **परमम्**=अलौकिक; **रूपम्**=विश्वरूप; **ऐश्वरम्**=ऐश्वर्ययुक्त।

अनुवाद

संजय ने कहा, हे राजन् ! इस प्रकार कह कर परम योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने ऐश्वर्यमय विश्वरूप का दर्शन कराया।।९।।

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यनेकोद्यतायुधम्।।१०।।
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्।।११।।

अनेक=नाना; **वक्त्र**=मुख (और); **नयनम्**=नेत्रों (से युक्त); **अनेक**=विविध; **अद्भुत**=विस्मयकारी; **दर्शनम्**=दशन वाले; **अनेक**=नाना; **दिव्य**=अलौकिक; **आभरणम्**=भूषणों से युक्त; **दिव्य**=दिव्य; **अनेक**=नाना प्रकार के; **उद्यत**=उठाये हुए; **आयुधम्**=शास्त्रें को, **दिव्य**=अलौकिक; **माल्य**=माला (और); **अम्बरधरम्**=वस्त्रों को धारण किये हुए; **दिव्य गन्ध**=सौरभ (से); **अनुलेपनम्**=उपलिप्त; **सर्व**=सब प्रकार से; **आश्चर्यमयम्**=आश्चर्यमय; **देवम्**=प्रकाशवान्; **अनन्तम्**=सीमारहित; **विश्वतःमुखम्**=सर्वव्यापी (विश्वरूपधारी)।

अनुवाद

अर्जुन ने उस विश्वरूप में असंख्य मुखों और नेत्रों को देखा। श्रीभगवान् का